श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था
विवेकानंद कॉलेज
कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

ISSN : 2281-8848

VIVEK
RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue on

साहित्य में अदिवासी और पर्यावरण विमर्श

March, 2023

VIVEK RESEARCH E-JOURNAL, Vol. VII, SPECIAL ISSUE NO. 1, MARCH, 2023 ISSN : 2581-8848

विशेष अंक

मार्च, 2023

साहित्य में अदिवासी और पर्यावरण विमर्श

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. प्रदीप पाटील

डॉ. स्वप्निल बुचडे

21	हिंदी साहित्य में आदिवासी-विमर्श	प्रा. अपर्णा संभाजी कांबळे	73-75
22	गोस्वामी तुलसीदास एवं संत एकनाथ के साहित्य के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. सागर रघुनाथ कांबळे	76-77
23	डेराडंगर आत्मकथा में चित्रित आदिवासी समस्याएँ	कु. प्राजक्ता अंकुश रेणुसे	78-80
24	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	वैशाली राजेंद्र मोहिते	81-83
25	आदिवासी जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'ग्लोबल गांव के देवता'	प्रा.सारिका राजाराम कांबळे	84-85
26	स्वयंप्रभा : प्रकृति और मानव का अनंत संबंध	प्रा. रोहिता केतन राऊत	86-89
27	अनबीता व्यतीत उपन्यास में पर्यावरण चित्रण	श्रीमती प्राजक्ता राजेंद्र प्रधान	90-92
28	व्यवस्था केन्द्रित शोषण के खिलाफ विद्रोह की धधकती आग: 'एनकाउंटर'	प्रा. किशोरी सुरेश टोणपे	93-95
29	'तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में' कहानी में आदिवासियों में शैक्षिक चेतना	श्री. सुरेश आनंदा मोरे	96-98
30	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	श्री.श्रीकांत जयसिंग देसाई	99-101
31	आदिवासी विमर्श : चिंतन, सृजन एवं सरोकार	माधुरी राजाराम चव्हाण (शिंदे)	102-105
32	"हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासी विमर्श"	श्री. सुभाष विष्णु बामणेकर	106-108
33	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	कामिनी जनार्दन मोहिते	109-110
34	'पांव तले की दूब' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएँ	प्रा. हणमंत परगोंडा कांबले	111-113
35	'स्वांग शकुंतला' के नाट्यगीतों का विश्लेषण और पर्यावरण	चन्द्र पाल	114-118
36	समकालीन कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श	कु. भाग्यश्री दादासाहेब चिखलीकर	119-120
37	सोशल मीडिया और पर्यावरणीय चिंता	अनिल विठ्ठल मकर	121-124
38	ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास में आदिवासी समुदाय की समस्याएँ	प्रा. अजय महेंद्र कांबळे	125-127
39	मधु कांकरिया के कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी समाज	आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी	128-130
40	पर्यावरण विमर्श: चिंतन, सृजन एवं सरोकार	श्री. आनंदराव आप्पासाहेब बेडगे	131-133
41	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	सौ. अमिता प्रशांत कारंडे	134-136
42	हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासी विमर्श	सौ. अश्विनी अशोक देशिंगे	137-139

ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास में आदिवासी समुदाय की समस्याएँ

प्रा. अजय महेंद्र कांबले
कमला कॉलेज, कोल्हापुर
मो. नं. 7038083055
ईमेल- ak6424515@gmail.com

सार:

हर राष्ट्र की अपनी अलग पहचान, संस्कृति और भाषा होती है। हम भी इसमें अपवाद नहीं है। भारत में सबसे अधिक भाषाएं एवं बोलियाँ बोली जाती है। यहाँ पर विभिन्न धर्मों का निर्माण हुआ है। जैसे सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म आदि धर्मो के जनक के रूप में भारत को जाना जाता है। लेकिन वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण आधुनिक सभ्यता को बढ़ावा मिलता जा रहा है और हमारी संस्कृति धीरे धीरे लुप्त होती नजर आ रही है। हमारी संस्कृति को जीवित रखने का कार्य गावों में अभी तक चल रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण गांवों और आदिवासी समाज का विस्तृत विश्लेषण किया है।

बीज शब्द: आदिवासी, असुर समुदाय, शिक्षा, शासन।

प्रस्तावना :

भारत एक कृषिप्रधान देश है। जहाँ ७० प्रतिशत लोग कृषि व्यवसाय के साथ जुड़े है। इसीलिए ग्रामीण जीवन की आवश्यकता बढ़ जाती है। वर्तमान समय में भी हमे हमारी संस्कृति को देखना है, तो वह ग्रामीण क्षेत्रों में ही मिल सकती है। इसी को ध्यान में रखकर हिंदी साहित्य में भी ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखकर साहित्य की शुरुआत हुई । हिंदी साहित्य में इसकी शुरुआत प्रेमचंद युगीन उपन्यासों से शुरू हुई। प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद, सियाशरण गुप्त, शिवपूजन सहाय, वृंदावनलाल वर्मा आदि लेखकों ने अपने साहित्य के केंद्र में ग्रामीण परिवेश को रखकर साहित्य का सृजन किया।

किंतु "1936 में प्रेमचंद के निधन के बाद हिंदी उपन्यास आश्चर्यजनक रूप से ग्राम विमुख हो गया था। यह स्थिति तब तक बनी रही जब तक नागार्जुन ने 'रतिनाथ की चाची' द्वारा इस गतिरोध को नहीं तोड़ा।"[1] पूंजीवाद और सरकार के के कारण ही असुर गावों में किस तरह का बदलाव होता है। उसी को केंद्र में रखकर यह उपन्यास लिखा गया है। इसमें आदिवासी समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक अंधविश्वास और वैश्वीकरण के कारण आदिवास समुदाय को कौन कौनसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसे चित्रित किया गया है।

आदिवासी समुदाय यहाँ का प्राचीनतम और मूल निवासी है। यह उपन्यास भी आदिवासी समुदाय के असुरों के गाव के ऊपर लिखा गया है। इस उपन्यास के केंद्र में भौरापाट और उसके पास के ही कन्दपाट आंम्बटोली असुर ग्राम है। रामचरण दुबे जी ने आदिवासी समुदाय की कुछ विशेषताएं कही है। "सामाजिक संरचना की मुख्य इकाईयां, जाती - संप्रदाय अथवा धार्मिक संप्रदाय और परिवार तथा नातेदारी समूह अकेले अलग - अलग रहकर काम नहीं करती। सहयोग के साथ साथ ग्राम संघर्ष, समाधान और सामाजिक गुटबंदी उसके अपने परंपरागत तरीके है।"[2] यह सारी विशेषताएं इस उपन्यास में हमे दृष्टिगत होती है। उपन्यास के केंद्र में असुर समुदाय को चित्रित किया गया है। असुर नाम सुनते ही हमारे सामने पहले से सुने आ रही कुछ किवदंतियां सामने आती है। जैसे की उपन्यास में भी उसे प्रस्तुत किया है। एक शिक्षक होने के बावजूद भी उसके मन में असुरों के बारे में अलग धारणा बनी हुई ही है। "खूब लंबे चौड़े, काले - कुलटे भयानक दांत - वात निकले हुए, माथे पर सिंग -विंग लगे हुए लोग होंगे।"[3] लेकिन जब सिर्फ कहावतें सुनकर अपना मत बना लेना और प्रत्यक्ष रूप से देखना उसमे अंतर होता है। यही इसमें दर्शाया गया है। असुर समुदाय भी हम जैसा ही होता है। पर मुख्य धारा से वो समुदाय दूर है। उन्हे मुख्य धारा में लाने के लिए कही न कही हम और शासन भी जिम्मेदार है। सरकार की ओर से उनके लिए अनेक योजनाएं तो घोषित की जाती है, लेकिन आदिवासी समुदाय उससे वंचित ही रहता है। वो योजनाएं उनके पास तक पहुंचती है या नहीं इसकी शाहनीशा नहीं की जाती, इसीलिए शायद आज असुर समुदाय हमसे पिछड़ा हुआ समुदाय रहा है। इसीलिए आदिवासी समुदाय को अनेक समस्याओं का प्रत्यक्ष रूप से सामना करना पड़ता है, उनमें से कुछ समस्या रणेंद्र जी के इस उपन्यास में भी दिखाई देते हैं।

अंधश्रद्धा की समस्याएँ:

आदिवासी समुदाय धार्मिक संप्रदाय या धार्मिक मूल्यों को बहुत ज्यादा महत्व देते हैं, उनके संस्कृति के प्रति वह हमेशा सजग रहते हैं। इसीलिए अनेक प्रचलित कुछ बातें अंधविश्वास के रूप में उनमें मानी जाती हैं। जैसे कि रणेंद्र जी ने इस उपन्यास के माध्यम से भी इसे चित्रित किया हुआ है। "दरसल अभी कुछ लोगों के मन में यह बात बैठी हुई है कि धान को आदमी के खून में सानकर बिछड़ा डालने से फसल बहुत अच्छी होती है।"[4] आदिवासी समुदाय में यह भी मान्यता प्रचलित है, कि देवता या देवी को प्रसन्न करने हेतु नरबलि की आवश्यकता होती है। इसी तरह की अनेक अंधश्रद्धाएँ असुर समुदाय में भी देखने को मिलती है।

भुखमरी की समस्याएँ:

आदिवासी समुदाय का घर जंगल माना जाता है। असुर समुदाय के पास इतनी जमीन भी नहीं है कि वे साल भर खाने के लिए कोई धान उगा सके। और जिनके पास थोड़ी बहुत जमीन थी वह लोग बरसात के ऊपर ही निर्भर रहते थे। "आदिवासी गरीब है, उनकी अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई है, उनकी उत्पादकता कम है क्योंकि उनकी जमीन कम है। उनकी जमीन बहुत उपजाऊ नहीं है, उनके पास सिंचाई के साधन तथा उत्पादन के साधनों का अभाव है। लेकिन यह सही नहीं है कि उनकी संस्कृति घटिया है, इसके उल्टे सच बात तो यह है कि आदिवासियों की संस्कृति, मूल्य तथा बहुत ही सामाजिक परंपराएं तथाकथित सभ्य बाहरी लोगों की संस्कृति मूल्य और सामाजिक परंपराओं से अधिक श्रेष्ठ और मानवीय है।"[5] भूख की समस्याओं के कारण असूर समुदाय के लोग जिनका मूल स्थान जंगल है, वह आज जंगल को छोड़कर आसाम या भूटान चले जाते हैं। ऐसा चित्र स्पष्ट रूप से इस उपन्यास में चित्रित किया गया है।

बीमारी की समस्याएँ:

आज वर्तमान समय में देश आधुनिकता की ओर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। लेकिन जो आदिवासी समाज है वह आज भी पिछड़ा हुआ नजर आता है। आदिवासी समुदाय का रहने का मूल स्थान जंगल है, लेकिन वर्तमान समय में शासन विकास के नाम पर उन जंगलों में से कोयला, बॉक्साइट निकाल रहे हैं। अनेक बड़े-बड़े कंपनियों को शासन की ओर से इन संसाधनों को निकालने का कॉन्ट्रैक्ट दिया जा रहा है लेकिन जो भी कंपनियां वहाँ से बॉक्साइट और कोयला तो निकाल रही है, लेकिन उन्हें निकालने के बाद जो गड्ढे बने हैं उन्हें भरने में ना कंपनी आगे आती है ना ही शासन। उन गड्ढों में बारिश का पानी भर जाने से वहां पर डेंगू, मलेरिया ऐसी बहुत सारी बीमारियों का फैलाव होता है। "हमारे होश में चार दर्जन से ज्यादा नई उम्र की लड़की माता बुखार सेरेब्रल से मर गए बूढ़े गुजर की तो उम्र गुजर गई थी तो गिनती ही नहीं हमारे सुख से इनको क्या उनको तो अपने मुनाफे से मतलब।"[6] इन सारी बीमारियों से असुर समुदाय की संख्या कम हो रही है ऐसी धारणा समुदाय के लोगों में बनी हुई है सरकार को हमारे समुदाय को नष्ट करना चाहता है। इसीलिए सरकार की ओर से कोई ठोस निर्णय नहीं लिए जा रहे हैं ऐसा उन्हें लगता है। इन सारी बीमारियों की मुल में वह गड्ढे हैं, पर उन्हें भरने में ना सरकार आगे आती है न हीं वह कंपनियां।

शैक्षिक समस्याएँ:

वर्तमान समय में शिक्षण को बहुत ज्यादा महत्व है लेकिन आज भी आदिवासी समुदाय शिक्षण से वंचित रहा हुआ हमें दिखाई देता है। आदिवासी समुदाय तक शिक्षा का प्रचार और प्रसार मोटे तौर पर ना होने के कारण लड़कों और लड़कियों में शिक्षा के प्रति उदासीनता ही नजर आती है। पर ऐसी बात नहीं है कि उनमें पढ़ने की काबिलियत नहीं है। रणेंद्र जी ने इस उपन्यास के माध्यम से असुर समुदाय के लड़के और लड़कियों को शिक्षा में क्यों आगे न बढ़ने के कारणों को चित्रित किया है। सरकार की माध्यम से आदिवासी समुदाय के लिए बहुत जगह पर स्कूल तो खोले गए हैं, लेकिन उनमें आदिवासी समुदाय के लड़कों का प्रवेश बहुत कम मात्रा में ही दिखाई देता है। "भौरापाट पाठ स्कूल आदिवासियों बालिकाओं के लिए खोला गया था किंतु उनमें पढ़ने वाली असुर बिरजिया बच्चियों की संख्या 10% से ज्यादा नहीं है। ज्यादातर बच्चियां हेडमिस्ट्रेस और टीचर्स की गांव की है और उनकी ही जाति के 'उरांव खड़िया खेरवार' परिवार की थी।"[7] जो भी स्कूल आदिवासी समुदाय के लिए बनवाए गए हैं उनमें वह सुविधा नहीं होती जो अन्य समुदाय के स्कूल में होती हैं। उपन्यास में रणेंद्र जी ने शिक्षा को लेकर यह भी चित्रित किया है, की सबसे प्रचलित स्कूल का निर्माण असुरों के 100 से ज्यादा घरों को उजाड़ कर बनाया था। लेकिन आदिम जाति का एक भी बच्चा यहां पर नहीं पड़ा है इससे आदिवासी समुदाय में यही धारणा बनी थी कि "हमारे बच्चों के लिए अधपड़ - अनपढ़ शिक्षक होंगे तो हमारे बच्चे ज्यादा से ज्यादा स्किल लेबर, पिऊन, क्लर्क बनेंगे और क्या यही हमारी औकात है? हमारी छाती पर ताजमहल जैसा स्कूल खड़ा कर हमारी हैसियत समझना चाहते हैं लोग।"[8] इनके लिए सरकार और हम भी उतना ही जिम्मेदार हैं। आदिवासी समुदाय के

लिए जो भी सुविधाएं या योजनाएं बनाई हुई है, उन योजनाओं को उन तक पहुंचाना हमारा ही काम है। लेकिन ऐसा दिखाई देता है कि योजनाएं तो उनके लिए बनाए गए हैं उसका लाभ अन्य लोग उठा रहे हैं।

निष्कर्ष:

वर्तमान समय में अगर हमें आदिवासी समुदाय को मुख्यधारा में लाना है तो सरकार की ओर से जो भी योजनाएं बनाई गई है उन्हें अच्छी तरह से आदिवासी समुदाय तक पहुंचाना होगा। उन्हें शिक्षा के माध्यम से की मुख्यधारा में लाया जा सकता है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिससे आदिवासी समुदाय के लोग अपने आप मुख्यधारा में आ सकते हैं। शिक्षा के माध्यम से उन्हें सरकारी नौकरी में आना संभव हो सकता है। जहां पर आदिवासी समुदाय रह रहा है वहां से सरकार और कंपनियां जो संसाधन निकाल रहे हैं उन्हें निकालने के बाद वहां के गड्ढे को भरने की जिम्मेदारी भी लेनी चाहिए। इससे आदिवासी समुदाय में फैली बीमारियों को रोका जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1) 'उपन्यास का इतिहास' गोपाल राय पृष्ठ 216
2) 'भारतीय समाज', श्यामशरण दुबे, अनुवाद-वंदना मिश्र 76
3) 'ग्लोबल गाँव के देवता', रणेंद्र पृष्ठ 11
4) 'ग्लोबल गाँव के देवता', रणेंद्र पृष्ठ 12
5) तलवार वीर भारत,झारखंड के आदिवासियों के बीच (एक ऐक्टिविस्ट के नोट्स), भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली 2008 पृष्ठ 224-225
6) 'ग्लोबल गाँव के देवता', रणेंद्र पृष्ठ 62
7) 'ग्लोबल गाँव के देवता', रणेंद्र पृष्ठ 20
8) 'ग्लोबल गाँव के देवता', रणेंद्र पृष्ठ 19